%%A. D. 1190 ― 1435

%%or Śaka 1112 – 1357

%% p. 705

NO. 378

Lakshmī-Narasiṃha Temple at Simhāchalaṃ<1>

( S. I. I. Vol. VI, No. 1121; A. R. No. 350-C of 1899 )

Ś. 1[3]00

(१।) स्वस्ति श्री [।।] शाकाव्दे यमलद्यु-वह्नि-वसुधा संख्यां(ख्या)न्विते मा-

(२।) धवे मा[से] विष्णुतिथौ सिते [भृ]गुदिने श्रीसि[ं]हशैलेशितुः । सत भक्तया

(३।) कलितोजुर इति विख्यातो व(प)रमं तीत्थ(र्त्थ) स्वभीषत फलाप्तये प्रतिदिन प्रादा-

(४।) त् प्रसूनस्रजं [।।] श्रीशकवरुषंवुलु १[३]०० गुनेंटि वै-

(५।) शाख विमल त्रित(ती) या भृगुवारमुनांडु<2> पोट्नूरि नीलदासश्री-

(६।) भागडगरा अ(व)टुलेंका तनक(कु) निष्य(ष्टा)र्त्थ सिद्धिगा श्रीनरसि[ं]हनारु (थु)-

(७।) नि श्रीभंडारमदुं(दु) व(प)द्मनिधि गंडमाडलु एदु(डु) पेट्टि कु-

(८।) ंच प्र[सा]दमु वृत्तिगां वडशि नित्यमुन्ना ओक अतुपाशि तिरु-

(९।) माल तेच्चि पेट्टेनु पाल अलाडि आल्लु डु पूराइकि आचं-

(१०।) द्रार्क्कस्या(स्था)इगां वेट्टेनु ई धर्म्ममु श्रीवैष्णव रक्ष श्री श्री श्री [।]

<1. In the forty-nineth niche of the verandah round the central shrine of this temple.>

<2. The corresponding date will be the 2nd April, 1378 A. D., Friday. The 3rd tithi expired on the previous day.>